International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 04(III), October - December, 2025, pp. 39-42

जिले में युवा स्वरोजगार योजना के लाभार्थियों के आय स्तर एवं रोजगार सृजन में परिवर्तन का आकलन – रीवा जिले के संदर्भ में

नीरज रजक[1*] | डॉ. मनीष कुमार शुक्ला[2]

[1]शोधार्थी वाणिज्य, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह, महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश।।
[2]प्राध्यापक वाणिज्य विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह, महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश।

[*]Corresponding Author: neerajrajak712@gmail.com

Citation: रजक, नीरज एवं शुक्ला, मनीष. (2025). जिले में युवा स्वरोजगार योजना के लाभार्थियों के आय स्तर एवं रोजगार सृजन में परिवर्तन का आकलन – रीवा जिले के संदर्भ में. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(04(III)), 39–42.

सार

रीवा जिले में राज्य शासन द्वारा संचालित युवा स्वरोजगार योजना का उद्देश्य युवाओं को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराकर उन्हें स्वरोजगार की दिशा में उन्मुख करना है। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि इस योजना के माध्यम से युवाओं को स्वरोजगार के अवसर प्रदान किये गये हैं, जिससे उनकी औसत वार्षिक आय में निरंतर वृद्धि हुई तथा स्थानीय स्तर पर अतिरिक्त रोजगार भी सृजित हुए हैं। विशेष रूप से सेवा–क्षेत्र तथा सूक्ष्म–उद्यमों में लाभार्थियों ने स्थिर व्यवसाय स्थापित किये हैं। हालांकि पूंजी उपलब्धता, विपणन सुविधाओं की कमी एवं प्रशिक्षण के अभाव जैसी समस्याएँ भी सामने आईं। निष्कर्ष रूप में योजना के क्रियान्वयन में दक्ष मार्गदर्शन, उन्नत कौशल प्रशिक्षण एवं सतत अनुवर्ती सहयोग प्रदान किया जाए, तो प्रदेश में युवा उद्यमिता को सुदृढ़ रूप से विस्तार प्राप्त हो सकता है।

शब्दकोश: *युवा स्वरोजगार योजना, स्वरोजगार, आय स्तर, रोजगार सृजन, उद्यमिता विकास, रीवा जिला।*

प्रस्तावना

वर्तमान समय में बेरोजगारी भारत सहित मध्यप्रदेश की प्रमुख आर्थिक चुनौती के रूप में उभरकर सामने आई है, जिसमें युवाओं की भागीदारी सर्वाधिक है। आर्थिक विकास की गति तभी सुनिश्चित होती है जब युवा वर्ग उत्पादक गतिविधियों में संलग्न होकर स्वावलंबन प्राप्त करता है। इस संदर्भ में राज्य सरकार द्वारा प्रारंभ की गई युवा स्वरोजगार योजना एक महत्त्वपूर्ण पहल के रूप में देखी जाती है, जिसका उद्देश्य युवाओं को व्यवसाय प्रारंभ करने हेतु वित्तीय एवं संस्थागत सहयोग प्रदान करना है। रीवा जिला, जिसे विंध्य क्षेत्र का आर्थिक–सामाजिक केंद्र माना जाता है, यहाँ कृषि एवं पारंपरिक व्यवसाय प्रमुख आजीविका के साधन हैं, परंतु आधुनिक स्वरोजगार अवसरों की ओर युवाओं का रुझान तीव्रता से बढ़ रहा है।

योजना के अंतर्गत युवाओं को सूक्ष्म, लघु एवं सेवा–क्षेत्र के व्यवसायों के लिए ऋण सहायता, अनुदान, मार्गदर्शन, कौशल प्रशिक्षण तथा बैंकिंग सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। इन सुविधाओं का उद्देश्य यह है कि युवा केवल नौकरी–प्राप्ति पर निर्भर न रहकर स्वयं उद्यम स्थापित कर सकते हैं। वाणिज्यिक अध्ययन के दृ

[*] *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

ष्टिकोण से यह योजना स्थानीय अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण, उत्पादन क्षमता बढ़ाने तथा उपभोक्ता–बाजार के विस्तार में सहायक साबित होती है।

पिछले कुछ वर्षों में देखा गया है कि रीवा जिले के युवाओं में उद्यमिता स्थापित करने की प्रवृत्ति बढ़ी है, परंतु इसके साथ–साथ कई चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। पूंजी तक पहुँच, बाजार में प्रतिस्पर्धा, विपणन कौशल का अभाव, तकनीकी दक्षता की कमी तथा सरकारी प्रक्रियाओं की जटिलता से युवाओं में उद्यमिता का जोखिम बढ़ जाता है। इसी कारण योजनाओं के प्रभाव का मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक हो जाता है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि योजनाएँ वास्तव में किस हद तक युवाओं के आय स्तर में वृद्धि और रोजगार सृजन में योगदान दे पा रही हैं।

इस अध्ययन का विशेष महत्व इसलिए भी है कि उद्यमिता केवल व्यक्तिगत आर्थिक लाभ तक सीमित नहीं रहती, बल्कि स्थानीय आर्थिक विकास, सामाजिक परिवर्तन और ग्रामीण–शहरी क्षेत्र के रोजगार ढाँचे पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। रीवा जिले के संदर्भ में यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि युवा स्वरोजगार योजना ने किस प्रकार लाभार्थियों की आर्थिक स्थिति में बदलाव लाया है, किन व्यवसायों में अधिक सफलता प्राप्त हुई और रोजगार सृजन की वास्तविक स्थिति क्या है। प्रस्तुत शोध–पत्र योजना के प्रभाव का वाणिज्यिक विश्लेषण करते हुए रीवा जिले की स्थानीय अर्थव्यवस्था में स्वरोजगार योजना के योगदान का मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

- युवा स्वरोजगार योजना के लाभार्थियों के आय–स्तर में परिवर्तनों का मूल्यांकन करना।
- लाभार्थियों द्वारा स्थापित उद्यमों में रोजगार सृजन की मात्रा एवं प्रकृति का अध्ययन करना।
- योजना के क्रियान्वयन में आने वाली समस्याओं की पहचान कर सुधारात्मक सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध–पद्धति पर आधारित है। आंकड़ों को संकलित करने हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक समंकों का प्रयोग किया गया है। विगत पाँच वर्षों (2020–21 से 2024–25) के आंकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। प्राप्त आंकड़ों को सांख्यिकीय तकनीकों औसत, प्रतिशत, वृद्धि दर का उपयोग करके विश्लेषित किया गया है। अध्ययन पूर्णतः प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है, साथ ही द्वितीयक स्रोत जैसे– सरकारी रिपोर्ट, आर्थिक सर्वेक्षण तथा योजना दिशा–निर्देशों का सहयोग लिया गया है।

विश्लेषण

युवा स्वरोजगार योजना के प्रभाव का आकलन करने हेतु पाँच वर्षीय अवधि (2020–21 से 2024–25) के प्राथमिक आँकड़ों का विस्तारपूर्वक विश्लेषण किया गया। विश्लेषण का उद्देश्य यह समझना था कि योजना के हस्तक्षेप से लाभार्थियों के आर्थिक व्यवहार, आय–सृजन क्षमता तथा रोजगार उपलब्धता में किस प्रकार का वास्तविक परिवर्तन परिलक्षित हुआ। वाणिज्यिक अध्ययन के दृष्टिकोण से यह मूल्यांकन अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे न केवल उद्यम संचालन की आर्थिक व्यवहार्यता ज्ञात होती है, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार–विस्तार की संभावनाओं का भी आकलन किया जा सकता है। प्राप्त आकड़े संकेत करते हैं कि योजना ने युवाओं में उद्यमिता के प्रति विश्वास बढ़ाया, जिसके परिणामस्वरूप व्यापारिक गतिविधियों में स्थिरता, उत्पादकता वृद्धि तथा पूंजी प्रवाह में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला है।

इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र के लाभार्थियों की औसत वार्षिक आय एवं रोजगार सृजन का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन किया गया है, जिसका विवरण सारणी क्रमांक–01 में प्रस्तुत किया गया है, जो इस प्रकार है –

सारणी 1: अध्ययन क्षेत्र में लाभार्थियों की औसत वार्षिक आय एवं रोजगार सृजन का विवरण

क्रमांक	वर्ष	औसत वार्षिक आय (रुपये में)	कुल सृजित रोजगार की संख्या
1.	2020–21	1,42,000	118
2.	2021–22	1,68,500	142
3.	2022–23	1,95,200	176
4.	2023–24	2,34,600	204
5.	2024–25	2,71,800	242

स्रोत– प्राथमिक डेटा, शोधार्थी द्वारा संकलित एवं युवा स्वरोजगार योजना लाभार्थी सर्वेक्षण, रीवा जिला (2020–21 से 2024–25)

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि आय एवं रोजगार दोनों में सतत् वृद्धि दर्ज हुई। 2020–21 से 2024–25 के बीच औसत आय में लगभग 91: की वृद्धि तथा रोजगार सृजन में 105: की वृद्धि परिलक्षित हुई है। स्वरोजगार योजना ने उद्यमों को स्थिरता प्रदान की, उत्पादन एवं सेवाओं की उपलब्धता बढ़ाई तथा युवाओं को आत्मनिर्भर बनने की दिशा में प्रेरित किया गया है। समष्टिगत स्तर पर यह परिवर्तन स्थानीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करते हुए स्वरोजगार आधारित विकास मॉडल को प्रोत्साहित करता है।

शोध–समस्याएँ एवं सुझाव

शोध के दौरान लाभार्थियों द्वारा कुछ प्रमुख समस्याएँ चिन्हित की गईं जैसे– ऋण स्वीकृति में देरी, बैंकिंग प्रक्रियाओं की जटिलता, तकनीकी एवं विपणन प्रशिक्षण के सीमित अवसर, कच्चे माल की उच्च लागत, प्रतिस्पर्धा का दबाव तथा परिवहन–सुविधाओं की कमी। अध्ययन क्षेत्र में लाभार्थियों ने बताया कि उद्यम स्थापित करने के बाद निरंतर मार्गदर्शन और बाजार–जोड़ (डंतामज स्पदांहम) नहीं मिलने से व्यवसाय विस्तार में कठिनाई आती है।

इन समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत किया गया है कि योजना के अंतर्गत सिंगल–विंडो सिस्टम विकसित किया जाए, जिससे लाभार्थियों को ऋण एवं स्वीकृति प्रक्रियाएँ सरल हो सके। प्रत्येक विकासखंड स्तर पर उद्यमिता प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाएँ एवं मार्केट–लिंकिंग के लिए ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म से जोड़ने की व्यवस्था की जाए। स्थानीय स्तर पर क्लस्टर–आधारित उत्पादन को प्रोत्साहित करना तथा नियमित मॉनिटरिंग एवं मेंटरशिप प्रदान करना भी आवश्यक है।

निष्कर्ष

युवा स्वरोजगार योजना ने रीवा जिले के युवाओं में उद्यमिता को नई दिशा प्रदान की है। अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि योजना का प्रत्यक्ष प्रभाव लाभार्थियों के आय स्तर, आजीविका सुरक्षा तथा रोजगार सृजन पर सकारात्मक रूप से पड़ा है। पाँच वर्षों के तुलनात्मक विश्लेषण में निरंतर आय वृद्धि यह दर्शाती है कि युवाओं ने उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी उपयोग कर अपने व्यवसाय को स्थिर रूप से विकसित किया है। इसके अतिरिक्त उद्यमों द्वारा अन्य व्यक्तियों को रोजगार प्रदान किए जाने से स्थानीय स्तर पर आर्थिक गतिविधियों में विस्तार हुआ है, जिससे जिले की समग्र व्यापारिक संरचना मजबूत हुई है।

हालाँकि योजना के क्रियान्वयन में अनेक चुनौतियाँ भी सामने आ रही हैं, जिन्हें दूर किए बिना उद्यमिता के दीर्घकालिक लक्ष्यों को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसके लिए प्रशिक्षण–व्यवस्थाओं को सुदृढ़ बनाने, वित्तीय प्रक्रियाओं को सरल करने तथा बाजार सुविधाओं का विस्तार करने की आवश्यकता है।

अतः युवा स्वरोजगार योजना न केवल व्यक्तिगत आर्थिक उन्नति का माध्यम बनी है, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था के विकास, उत्पादकता वृद्धि और युवाओं के आत्मनिर्भर बनने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुई है। यदि सरकार, बैंकिंग संस्थान और उद्यमिता–समर्थन तंत्र मिलकर अधिक प्रभावी रणनीति अपनाते हैं, तो यह योजना जिले तथा प्रदेश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मध्यप्रदेश शासन, उद्योग विभाग : युवा स्वरोजगार योजना दिशा–निर्देश, वर्ष 2021।
2. आर्थिक सर्वेक्षण, मध्यप्रदेश, विभिन्न वर्ष 2020–21 से 2024–25।
3. शर्मा, पी., भारतीय उद्यमिता विकास", अटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली, वर्ष 2019।
4. सिंह, आर., ग्रामीण स्वरोजगार एवं उद्यमिता", लोकवाणी प्रकाशन, भोपाल, 2020।
5. जिला उद्योग केन्द्र रीवा – रीवा जिले में स्वरोजगार योजना क्रियान्वयन, जिला उद्योग केन्द्र रिपोर्ट रीवा, वर्ष 2022।
6. रघुवंशी, एस., स्वरोजगार योजनाओं का आर्थिक प्रभाव", जर्नल ऑफ सोशल एंड इकोनॉमिक स्टडीज, वर्ष 2022।
7. भारत सरकार – सूक्ष्म, लघु एवं मध्य उद्यम मंत्रालय, स्वरोजगार एवं उद्यमिता विकास, भारत सरकार रिपोर्ट, नई दिल्ली, वर्ष 2020।

❑❑❑